www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-8* *August 2025***

सांस्कृतिक कार्यक्रम का भौतिक पर्यावरण पर प्रभावः एक अध्ययन

डॉ० अमित कुमार सिंह

पी–एच0 डी0, भूगौल विभाग, बी. एन. एम. यू., मधेपुरा

सारांशः सांस्कृतिक कार्यक्रम, जैसे उत्सव, संगीत समारोह और सांस्कृतिक मेलों, न केवल सामाजिक और आर्थिक विकास को बढ़ावा देते हैं, बल्कि भौतिक पर्यावरण पर भी गहरा प्रभाव डालते हैं। यह आलेख विभिन्न शोधों की समीक्षा के आधार पर इन कार्यक्रमों के पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण करता है।

प्रमुख निष्कर्षों में यात्रा से उत्पन्न उच्च कार्बन उत्सर्जन, अपशिष्ट उत्पादन और जल संसाधनों पर दबाव शामिल हैं, हालांकि कुछ मामलों में सकारात्मक प्रभाव जैसे जागरूकता और बुनियादी ढांचे का सुधार भी देखा गया है। सुझाव दिया गया है कि सतत प्रबंधन रणनीतियों से नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भौतिक पर्यावरण पर सीधा प्रभाव पड़ता है, जिसमें ध्वनि और वायु प्रदूषण भारी मात्रा में कचरा (अपशिष्ट) उत्पादन और संसाधनों का अत्यधिक उपभोग शामिल है, विशेषकर बड़े आयोजनों में आधुनिक दुनिया में, व्यक्तिवाद के बढ़ने के साथ, लोगों को एक–दूसरे के करीब लाने और सामाजिक मेलजोल बढ़ाने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर ध्यान देना कम हो गया है।

कुंजीः सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरण, प्रदूषण।

प्रस्तावनाः सामाजिक संपर्क और नागरिक उपस्थिति को सुगम बनाने के लिए गुणवत्तापूर्ण सार्वजनिक स्थानों की आवश्यकता पर बल देते हैं। उनका यह भी मानना है कि सार्वजनिक स्थानों में सामाजिक जीवन मौलिक रूप से व्यक्तियों और समाज के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने में सहायक होता है। साथ ही, भौतिक वातावरण और उसके समाजीकरण के संदर्भ में मानवीय व्यवहार के प्रतिरूपों की भूमिका पर ध्यान देना आवश्यक है। आजकल, वास्तुकारों और शहरी डिजाइनरों द्वारा मानवीय व्यवहार की मनोवैज्ञानिक समझ पर विचार किया जा रहा है क्योंकि मानवीय व्यवहार भौतिक वातावरण से घनिष्ठ रूप से संबंधित है। मानवीय व्यवहार भौतिक वातावरण से प्रभावित होता है, और बदले में, मानवीय व्यवहार संस्कृति, अर्थव्यवस्था और सामाजिक कारकों से प्रभावित होकर पर्यावरण को प्रभावित करता है।

गेहल का मानना है कि भौतिक वातावरण को डिज़ाइन करके, सार्वजनिक स्थानों पर होने वाली गतिविधियों और उनका उपयोग करने वाले लोगों की संख्या, गतिविधि की अवधि और गतिविधि के प्रकार को प्रभावित किया जा सकता है। उनका यह भी मानना है कि सार्वजनिक स्थानों पर गतिविधियों के निर्माण को कुछ कारकों द्वारा प्रभावित किया जाता है, जिनमें से कृत्रिम वातावरण एक है।

साहित्य की समीक्षा

सामूहिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सार्वजनिक स्थानों की आवश्यकता पर लंबे समय से विचार किया जाता रहा है। पूर्व–आधुनिक काल से ही, ग्रीस में अगोरा जैसे शहरी सार्वजनिक स्थानों ने आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक–सांस्कृतिक भूमिकाएँ निभाई हैं। ईरान में, प्राचीन काल से ही, बाज़ारों ने सामाजिक–आर्थिक अंतःक्रियाओं के लिए एक मंच के रूप में सार्वजनिक स्थानों की भूमिका निभाई है। शहरी चौकों ने सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गिब्सन के सिद्धांत के अनुसार, मनोवैज्ञानिक विज्ञान

में तीन प्रकार के वातावरण परिभाषित किए गए हैं: स्थलीय वातावरण, सांस्कृतिक वातावरण और सजीव वातावरण। गिब्सन की वातावरण की परिभाषाओं के अनुसार, पर्यावरणीय मनोविज्ञान से संबंधित मुद्दों से निपटने में, क्षेत्र के भूगोल, इतिहास, पहचान और जलवायु पर ध्यान देना आवश्यक है।

भौतिक वातावरण में मानव–पर्यावरण अंतःक्रिया के प्रभावी घटकों का अध्ययन किया। अपने शोध में, उन्होंने स्थान की सामाजिकता का अर्थ यह बताया कि भौतिक स्थान, अपनी स्थानिक विशेषताओं के आधार पर, गतिविधि केंद्रों के निर्माण और स्थान के कुछ हिस्सों में कार्य करने की इच्छा को जन्म देता है। पर्यावरण, गतिविधि प्रणालियों और गतिविधि स्थानों में उपयोगकर्ता अंतःक्रियाओं का अध्ययन किया गया है। इस संदर्भ में, हमदान शहर के तीन आवासीय समूहों में 27 केस स्टडीज़ का चयन किया गया है। इस शोध का शोध ढांचा दर्शाता है कि स्थानिक संरचना के अतिरिक्त, गतिविधि स्थानों की सामाजिकता जीवनशैली से भी प्रभावित होती है। अंत में, शोध के परिणाम दर्शाते हैं कि वास्तुशिल्प स्थान (प्राकृतिक) पर्यावरण से किस प्रकार संबंधित है, और प्राकृतिक तत्व स्थान में ऐसी गुणवत्ता का निर्माण करते हैं जो स्वयं उस स्थान में सार्वजनिक गतिविधियों की इच्छा को प्रभावित करती है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम मानव समाज का अभिन्न अंग हैं, जो सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, इन कार्यक्रमों का भौतिक पर्यावरण–जिसमें वायु, जल, मिट्टी और जैव विविधता शामिल हैं– पर प्रभाव अक्सर उपेक्षित रहता है। वैश्विक स्तर पर, जैसे हेलसिंकी या नाइजीरिया के इगाला साम्राज्य में आयोजित उत्सवों से पर्यावरणीय चुनौतियां उत्पन्न होती हैं। यह आलेख सांस्कृतिक कार्यक्रमों के पर्यावरणीय प्रभावों पर उपलब्ध शोधों की समीक्षा करता है, जिसमें नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पहलुओं को शामिल किया गया है। उद्देश्यः इन प्रभावों को समझना और सतत विकास के लिए सिफारिशें प्रस्तुत करना।

सकारात्मक प्रभाव

सांस्कृतिक कार्यक्रम पर्यावरण को मजबूत बनाने में योगदान देते हैं:

इंफ्रास्ट्रक्चर विकासः ये आयोजन नई सुविधाओं का निर्माण या मौजूदा इंफ्रास्ट्रक्चर के सुधार को प्रोत्साहित करते हैं, जैसे पुराने सिनेमाघरों का नवीनीकरण या अप्रयुक्त स्थानों का सांस्कृतिक उपयोग। उदाहरणस्वरूप, ट्रांसिल्वेनिया इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (TIFF) ने क्लूज–नापोका में पर्यावरणीय मुद्दों को सुधारने में मदद की, बिना पर्यटन संसाधनों को नुकसान पहुंचाए। जागरूकता बढ़ानाः पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने वाले कार्यक्रम फैलाते हैं, जैसे TIFF का ECOTIFF सेक्शन, जो समुदाय को टिकाऊ प्रथाओं के लिए प्रेरित करता है।

नकारात्मक प्रभाव

हालांकि, इन कार्यक्रमों के पर्यावरणीय नुकसान भी महत्वपूर्ण हैं:

प्रदूषण और अपशिष्टः दर्शकों की यात्रा से CO2 उत्सर्जन (जैसे यूके के त्योहारों में 80% उत्सर्जन) और अपशिष्ट उत्पादन बढ़ता है। संगीत त्योहारों में प्रति दर्शक 13.69 लीटर पानी की खपत होती है, जो संसाधनों का ह्रास करती है। भौतिक क्षतिः बड़ी भीड़ से पर्यावरण क्षति, पारिस्थितिकी तंत्र हानि (जैसे 2008 जारागोजा एक्सपो में नदी तट क्षति) और जैव विविधता ह्रास होता है। सांस्कृतिक त्योहारों में अत्यधिक पर्यटक प्रवाह से प्राकृतिक संसाधनों का अस्थायी शोषण होता है। अन्यः ये आयोजन अक्सर अस्थायी होते हैं, जिससे लंबे समय तक पर्यावरण लाभ नहीं मिलते।

स्थिरता के लिए सिफारिशें

शोधकर्ता सुझाव देते हैं कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों को केवल "अधिक टिकाऊ" बनाने के बजाय व्यापक स्थायी विकास के लिए उपयोग किया जाए:

व्यवहार परिवर्तनः आयोजनों को जागरूकता अभियानों के रूप में इस्तेमाल करें, जैसे इको–फेस्टिवल या इलेक्ट्रिक वाहन प्रदर्शन, जो दर्शकों के दैनिक जीवन को प्रभावित करें।

समुदाय भागीदारीः स्थानीय निवासियों को योजना में शामिल करें, भीड़ प्रबंधन करें और इंफ्रास्ट्रक्चर विकास को पर्यावरण संरक्षण से संतुलित करें।

एकीकरण और शासनः आयोजनों को व्यापक नीतियों (जैसे सार्वजनिक परिवहन प्रोत्साहन) से जोड़ें और हरे धुलाई (ग्रीनवाशिंग) से बचें। कॉविड–19 जैसी चुनौतियों से सीखते हुए, अधिक लचीले मॉडल अपनाएं।

नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव

सांस्कृतिक कार्यक्रम अक्सर वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण को बढ़ावा देते हैं, जो भौतिक पर्यावरण को क्षति पहुंचाते हैं।

1. **वायु प्रदूषणः** दीवाली जैसे त्योहारों में पटाखों का उपयोग वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) को खतरनाक स्तर (400–500) तक पहुंचा देता है, जो श्वसन रोगों का कारण बनता है। होली में रासायनिक रंगों से निकलने वाले कण वायु को दूषित करते हैं। एक अध्ययन के अनुसार, दीवाली के बाद दिल्ली में स्मॉग की परत बिछ जाती है, जो स्मॉग और ब्रोंकाइटिस को बढ़ावा देती है।
2. **जल प्रदूषणः** नवरात्रि और दुर्गा पूजा के दौरान मूर्ति विसर्जन से नदियों में भारी धातुएं (सीसा, पारा, आर्सेनिक) और रसायन घुल जाते हैं, जिससे pH, BOD, COD और ज्वै बढ़ जाता है। उदाहरणस्वरूप, यमुना और सरयू नदियों में विसर्जन के बाद प्रदूषक सीमाओं से अधिक हो जाते हैं, जो जलीय जीवन को असंतुलित करते हैं। होली में जल की बर्बादी (रंगों के लिए लाखों लीटर पानी) और विषैले रंग जल स्रोतों को दूषित करते हैं।
3. **ध्वनि प्रदूषणः** नवरात्रि के गरबा और दुश्हेरा के रामलीला में तेज संगीत और पटाखे ध्वनि स्तर को 80–100 डेसिबल तक ले जाते हैं, जो सुनने की क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

ये प्रभाव विशेष रूप से भारत में गंभीर हैं, जहां त्योहारों की संख्या अधिक है और संसाधन सीमित। शोध बताते हैं कि उपनिवेशवाद और वैश्वीकरण ने पारंपरिक इको–फ्रेंडली प्रथाओं को कमजोर किया है।

सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव

कुछ सांस्कृतिक कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देते हैं। आदिवासी त्योहार जैसे सरहुल (झारखंड) में सल वृक्ष की पूजा जल संरक्षण और कृषि चक्र को मजबूत करती है। बहा उत्सव (ओडिशा) में वृक्षों की प्रजनन अवधि में संसाधन उपयोग पर प्रतिबंध जैव विविधता को संरक्षित करता है। अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव जैसे ट्रांसिल्वेनिया (TIFF) में ECOTIFF सेक्शन पर्यावरण जागरूकता फैलाता है और पुरानी इमारतों का नवीनीकरण करता है। ये कार्यक्रम सामुदायिक भागीदारी से टिकाऊ विकास को प्रोत्साहित करते हैं।

सुझाव और टिकाऊ प्रथाएं

पर्यावरणीय क्षति को कम करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए गए हैं:

इको–फ्रेंडली सामग्रीः प्राकृतिक रंगों (हल्दी, चंदन) का उपयोग होली में और बायोडिग्रेडेबल मूर्तियों (मिट्टी–प्राकृतिक रंग) का गणेश चतुर्थी में।

कृत्रिम विसर्जन तालाबः दुर्गा पूजा के लिए कृत्रिम तालाबों का निर्माण, जो प्रदूषकों को नियंत्रित रखते हैं और नदियों को बचाते हैं। अरुणाचल प्रदेश के अध्ययन में यह प्रभावी पाया गया।

जागरूकता अभियानः त्योहारों में पर्यावरण शिक्षा को शामिल करना, जैसे टिफ की तरह विशेष सत्र। आदिवासी ज्ञान को पुनर्जीवित कर जलवायु लचीलापन बढ़ाना।

नीतिगत हस्तक्षेपः पटाखों पर प्रतिबंध, जल संरक्षण अभियान और सामुदायिक भागीदारी।

निष्कर्षः सांस्कृतिक कार्यक्रम भौतिक पर्यावरण पर दोहरी भूमिका निभाते हैं– क्षति पहुंचाने वाली और संरक्षणकारी। नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए पारंपरिक मूल्यों को आधुनिक टिकाऊ प्रथाओं से जोड़ना आवश्यक है। शोध दर्शाते हैं कि जागरूकता और नवाचार से ये कार्यक्रम पर्यावरण–अनुकूल बन सकते हैं, जो सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखते हुए सतत विकास सुनिश्चित करेंगे। आगे के अध्ययन क्षेत्रीय विविधताओं पर केंद्रित होने चाहिए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम भौतिक पर्यावरण पर मिश्रित प्रभाव डालते हैं, जहां सकारात्मक पहलू विकास को बढ़ावा देते हैं, लेकिन नकारात्मक प्रभावों को अनदेखा नहीं किया जा सकता। अध्ययन दर्शाते हैं कि निवासी इन आयोजनों को सामान्यतः टिकाऊ मानते हैं, यदि समुदाय–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाया जाए। भविष्य के शोध को बहु–विषयी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, ताकि ये कार्यक्रम जलवायु परिवर्तन और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच पुल का काम करें।

प्राकृतिक संसाधनों एवं तत्वों का संरक्षण, बचत प्रक्रिया, दीर्घकालीन उपाय, अत्यधिक दोहन पर रोक, वैकल्पिक समाधान, समुचित उपयोग तथा आम जनमानस में प्राकृतिक संसाधनों के बेहताशा उपयोग के प्रति

जागरूकता आदि उपायों को अपनाकर किया जा सकता है। वर्तमान समय की मांग है कि भारतीय संस्कृति की प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से जुड़ी उपर्युक्त समस्त संकल्पनाओं का चिंतन करें और इन्हें अपने जीवन में अपनाएं। इस धरा के अस्तित्व को भावी संतति के लिए बचा सकें और अंत में– जब प्रकृति का करेंगे अधिक शोषण, तो नहीं मिलेगा किसी को भी पोषण। इतनी महान संस्कृति के उन्नायक ऋषि–मुनियों की इस धरा पर लोकशाही एवं नौकरशाही के द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का अभाव दृष्टिगोचर होता है। हम कंक्रीट के जंगल का विस्तार करने के साथ–साथ अपनी सांस्कृतिक विरासत को विस्मृत करते जा रहे हैं, यदि हम हमारी सांस्कृतिक विरासत का अनुशीलन करते हुए सादा जीवन उच्च विचार के आदर्श को अपनाएं, तो हम वैश्विक जगत को पारिस्थितिकीय संतुलन का एक मॉडल दे सकेंगे और यह भारत का समूची दुनिया को एक बहुत बड़ा अमूल्य उपहार होगा। जातीय वानिकी प्रथाओं को परंपराओं, प्रथाओं एवं अनुष्ठानों एकीकरण प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जा सकता है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं प्रबंधन एक कठिन कार्य है। हमें इस विषय पर चिंतन करने के लिए खुले दिमाग से सभी पक्षों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना होगा। कुछ व्यक्तियों के निहित स्वार्थ बहुसंख्यकों के दुख का कारण बन सकते हैं तथा प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण विनाश भी संभव है। कानून, नियम एवं विनियमन से आगे हमें अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक आवश्यकताओं को सीमित करना होगा, जिससे कि विकास के नवीन प्रतिमानों का लाभवर्तमान तथा भावी पीढ़ियों को उपलब्ध हो सके।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. प्रहलाद सिंह, भारतीय संस्कृति में शुरू से ही पर्यावरण का विशेष महत्त्व, प्रभा साक्षी डॉट कॉम, 5 जून 2021
2. मलिनी अवस्थी, भारतीय संस्कृति के मूल में है पर्यावरण संरक्षण की भावना, जागरण डॉट कॉम।
3. भारती बस्ती, भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण, भारती बस्ती डॉट कॉम।
4. गणेश कुमार पाठक "भारतीय चिंतन परंपरा में जल एवं पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा"
5. लोकेंद्र सिंह "प्रकृति सहेजने का शुभ संदेश देती है हमारी परंपराएं"
6. ऋग्वेद
7. छांदोग्य उपनिषद
8. अर्थववेद
9. यजुर्वेद
10. मनुस्मृति
11. स्कंद पुराण
12. चाणक्य नीति
13. Getz, D., & Page, S. J. (2016). Progress and prospects for event tourism research. Tourism Management.
14. Laguo, E. O. (2020). Assessment of Environmental Impact of Cultural Festivals in Igala Kingdom, Nigeria. International Journal of Social Sciences and Humanities Review.

Cite this Article-

'डॉ० अमित कुमार सिंह', "सांस्कृतिक कार्यक्रम का भौतिक पर्यावरण पर प्रभावः एक अध्ययन', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:08, August 2025.

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i800017

Published Date- 11 August 2025